श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर शुभकामना

अज अव्यय अच्युत होकर भी
वह प्रकटित होता है।
जब जब तिमिर सघन होता है
धर्म शक्ति खोता है।
जीवन का आदर्श दिखाने
ऋत का पाठ पढ़ाने।
भक्ति लता संवर्धित करने
जन विश्वास बढ़ाने।1।

देने विह्वलबुद्धि मनुज को
कर्म योग की शिक्षा।
हरने को समूल संशय सब
निज कर्तव्य अनिच्छा।
असुर शक्ति उच्छेदन करने
भरने वेणु स्वरों को।
देने नव आह्लाद पूर्ण करने
निज दत्त वरों को।2।

उसके प्रकटीकरण दिवस पर

शिर मद छोड़ नमित हों।

बढ़े आत्मबल दुर्जय षडरिपु

सद्यः पूर्ण दमित हों।

विविध प्रवाद, कुतर्क बुद्धि के

पाकर प्रभा शमित हों।

नव्य कालयवनादि निषूदित

हों सुख राशि अमित हों।3।

स्थानः— भोपाल शिव कुमार मिश्र

दिनांकः— 02/09/2018